व्यावहारिक अध्यात्म के धनी—
श्री जुगलकिशोर बिरला



लेखक—
श्री सत्यभक्त

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यावहारिक अध्यात्म के धनी श्री जुगलकिशोर बिरला

पिलानी (राजस्थान) में बिरला जी का एक कृषि-फार्म है। एक दिन जुगलकिशोर जी ताँगे पर में बैठकर उसी फार्म को जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक ग्राम निवासी वृद्ध,दम्पति को देखा, जिन्हें चौकीदार ने फार्म के भीतर होकर जाने से रोक दिया था, क्योंकि हर तरह के आदमियों के आने-जाने से वहाँ कभी-कभी चोरी हो जाती थी । वे बुड्ढे-बुढ़िया आपस में कह रहे थे। कि अब चक्कर खा कर जाना पड़ेगा, जिससे गाय को दुहने में देर हो जायगी और बछड़ा बेचैन होगा। यह चर्चा जुगलकिशोर जी ने सुन ली और उसी समय ताँगे से उतरकर ताँगे वाले को आदेश दिया कि वृद्ध-दम्पति को बैठाकर जल्दी से उनके गाँव पहुँचा दे। ग्रामीण इतनी सहानुभूति पाकर गद्‌गद हो गये और नेत्रों में पानी भर आया। उन्होंने बड़ी विनय की कि वे ऐसा न करें उनका कोई खास नुकसान नहीं होगा, पर बिरला जी ने उनकी एक न सुनी, और उन्होंने ताँगे में बैठाकर स्वयं पैदल चल पड़े।

पिलानी में ही एक बार मूसलाधार वर्षा हुई, जिससे चारों तरफ जल भर गया और कच्चे मकान धड़ाधड़ गिरने लगे। देखते-देखते अनेक लोग बिना घरबार के हो गये । यह देखकर वहाँ के बिरला कालेज के अध्यापक और विद्यार्थी सहायता के लिये पहुँचे और गरीबों की झोपड़ियों के पास से पानी को काटकर निकालने का प्रयत्न करने लगे। इतने में देखा गया कि जुगलकिशोर जी स्वयं भी धोती चढ़ाये और वर्षा में भीगते हुये वहाँ उपस्थित हैं। उसी समय उन्होंने व्यवस्था की कि जिनके घर टूट गये हैं उनको अतिथिगृह और 'कुबेर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भंडार' में ले जाकर टिका दिया जाय । भंगी लोगों के घर भी डूब रहे थे, पर उन्होंने तब तक अपने घरों को छोड़ने में असहमति प्रकट की जब तक उनका सामान भी उनके साथ सुरक्षित न पहुँचा दिया जाय । बिरला जी विद्यार्थियों से कहकर उनका सामान उन्हीं की चारपाइयों पर रखकर ठहरने की जगह पहुँचाने की व्यवस्था कर दी । जब तक लोग उनके यहाँ ठहरे तब तक सबको भोजन भिजवाते रहे और जब पानी हट गया तो मकानों की मरम्मत के लिये ईंट, बल्ली, टीन आदि भी दिये जाने का प्रबन्ध कर दिया ।

ये घटनायें बहुत बड़ी नहीं हैं, पर जब एक ऐसा व्यक्ति, जिसे भारतवर्ष का सबसे बड़ा उद्योगपति और धनकुबेर माना जाता हो, बिना कहे अपने मन से इस प्रकार के कार्यों में भाग लेता है और उनके लिये असुविधा भी सहन करता है, तो यह कहना पड़ता है कि अवश्य ही उनके हृदय में सहृदयता और मानवता की भावना है । श्री जुगलकिशोर जी के दर्जे के व्यक्ति कदाचित् ही स्वयं उपस्थित होकर सेवा कार्यों में भाग लेते हैं । उनके सभी आदेश नौकरों तथा रुपया खर्च करके पूरे हो जाते हैं । पर यह जुगलकिशोर जी की आन्तरिक सेवाभावना और अहङ्कार शून्यता थी कि सामान्य लोगों की सहायता करने को स्वयं तैयार रहते थे ।

श्री जुगलकिशोर बिरला का जन्म सन् १८८७ में पिलानी [राजस्थान] में हुआ था । आपका वंश उसी समय व्यापारिक क्षेत्र में प्रसिद्ध था, इसलिये आपकी शिक्षा-दीक्षा विशेष रूप से उसी दिशा में हुई । आपके पिता श्री बलदेव दास जी बिरला की मान्यता थी कि 'उतना ही पढ़ो, जितना काम आवे, विद्वान व्यक्ति व्यापारी नहीं हो सकता ।" इसलिये श्री जुगल किशोर जी को वाणिज्य-व्यापार के हिसाब-किताब और कुछ लिखना लकड़ी की पट्टी पर ही सिखा दिया गया । इसके बाद ही आप पैतृक व्यापार में भाग लेने लगे और इस कार्य में अच्छी सफलता प्राप्त करके दिखाई । पर इधर वर्षों से व्यवसाय के संचालन का भार अन्य भाइयों ने उठा लिया था आप अपना पूरा समय समाज सेवा और हिन्दू जाति के उत्कर्ष में ही लगा रहे थे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सात्विक दानी--

उन्होंने जो दिल्ली, मथुरा, पटना आदि में बड़े-बड़े बिरला मन्दिर बनवाये हैं और उन्हीं के साथ 'वेद मन्दिर' [गुरुकुल कांगड़ी] और विश्वनाथ मन्दिर [हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस] भी तैयार करके उन संस्थाओं को दे दिये हैं, उनकी चर्चा हम अधिक नहीं करते । वे तो ऐसे काम हैं, जो सामान्य आदमियों के क्षेत्र से बाहर हैं । यद्यपि उनके निर्माण का समस्त भार जुगलकिशोर जी ने ही उठाया पर उनके कारण समस्त बिरला-परिवार का नाम देश भर में फैला है । हमारी दृष्टि में उनका अधिक महत्व उन कामों के लिये है, जिसको वे हिन्दू-धर्म की सेवा और प्रगति के लिये निरन्तर करते रहे थे, और जिनके विषय में सर्व साधारण को अभी तक कुछ अधिक ज्ञात न था । कारण यह था कि श्री जुगल किशोर जी सात्विक दान के नियम के मानने वाले थे । इसलिये वे जो कुछ देते थे उचित कार्य और पात्र को देख कर चुपचाप दे देते थे । 'गीता' में कहा गया है---

दातव्यमिति यद्दान दीयते अनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकम् स्मृतम् ॥

"अर्थात् वही दान सात्विक कहलाता है जो कर्तव्य बुद्धि से किया जाता है, जिसमें योग्य देश, काल और पात्र का विचार किया जाता है और जो अपने साथ प्रत्युपकार न करने वाले को दिया जाता है ।"

इसका एक उदाहरण पिलानी में मिला । वहाँ उनकी पैतृक हवेली में जो बुड्ढा मेहतर झाड़ू देता था, वह एक दिन उनको दिखाई नहीं दिया और उसकी जगह एक युवा मेहतर काम करता दिखाई पड़ा । पूछने पर नये मेहतर ने बताया कि "मैंने आपकी बड़ी सराहना सुनी थी और इससे आपकी सेवा करने का इच्छुक था । मैंने पुराने मेहतर से अपने मन की बात कही, तो उसने इसके लिये सात सौ रुपया माँगे । मैंने उतने रुपये उसे दे दिये और मुझे आपकी सेवा का अवसर मिल गया ।" यह सुनकर बिरला जी ने पुराने मेहतर को बुलाया । उसे एक मीठी-सी फटकार लगाकर कहा "मुझे काम तुम्हीं से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कराना है। रुपये की जरूरत थी तो मुझसे कहना चाहिए था।" उसी समय एक हजार रुपये देकर उसे कर्ज से मुक्त करा दिया।

श्री बनारसी दास जी चतुर्वेदी ने उनकी इस प्रकार की दानशीलता के कई उदाहरण अपने संस्मरणों में लिखे हैं। चतुर्वेदी जी ने जब जिस सार्वजनिक कार्य के लिये कहा, उन्होंने तुरन्त उसकी पूर्ति करदी। इन सहायता कार्यों में एक विशेषता यह भी थी कि चतुर्वेदी जी पैंतीस वर्ष पूर्व अपने द्वारा सम्पादित 'विशाल भारत' में उनकी बड़ी कठोर आलोचना कर चुके थे। वे स्वयं लिखते हैं—"मैंने जुगल किशोर जी के धार्मिक कार्यों से वर्णन में ऐसी अशिष्ट भाषा का प्रयोग किया था कि इस समय उसको उद्धृत करना भी मेरे लिये लज्जाजनक होगा।

अमर शहीद चन्द्र शेखर आजाद की माता घोर आर्थिक संकट में थी, यह सूचना किसी प्रकार समाचार पत्रों में छपादी गई और नेहरू जी को पत्र द्वारा सूचना दी गई। पत्र पढते ही नेहरू जी ने २५० रुपये का चेक भेजा, पर उससे भी पहले श्री जुगल किशोर जी का पत्र चतुर्वेदी जी के पास पहुंच गया—

"नमस्ते! शहीद चन्द्रशेखर आजाद की वृद्धिमाता के विषय में समाचार पत्रों में छपा पड़ा। इसके आधार पर माताजी की सेवा में १६० रु० आपके द्वारा भिजवाये हैं। आशा है इस बीच में सरकार की भी सहायता मिलने लग जायगी, अन्यथा फिर सूचना दें।"

पंजाब मार्शल ला के समय तीरथराम पंजाबी को लम्बी सजा दी गई थी। भारत विभाजन के बाद तीरथराम भी दिल्ली आ गये और बड़े आर्थिक सङ्कट में दिन गुजारने लगे। चतुर्वेदी जी ने उनका मामला पत्रों में छपवा दिया इससे पहले जुगल किशोर जी ने ही २०० रुपये भेज कर उनकी सहायता की

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री जहूरबख्श जी ने चतुर्वेदी जी को एक पत्र भेजा कि मेरे मकान में आग लगादी गई है, जिससे बड़ी हानि हुई है और मैं सङ्कट में हूँ। चतुर्वेदी जी ने इसकी सूचना जुगल किशोर जी को भेज दी, जो उस समय काश्मीर में थे। उन्होंने उसी समय २५० रु० उनके पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भेज दिये और फिर नियमित रूप से मासिक सहायता भी भिजवाते रहे।

एक जाट लड़के को ईसाई मिशनरियों ने बहका लिया। उसने अपनी दुरवस्था चतुर्वेदी जी के पास लिखकर भेजी, कि यदि कुछ रुपये मिल जायें तो मैं इनके बन्धन से मुक्त हो सकता हूँ। जब यह समाचार बिरलाजी को भेजा गया तो उन्होंने सहायता करके उसे छुड़वा दिया और बाद में भी कुछ मदद दी।

फिरोजाबाद के दो बाल्मीकि (मेहतर जाति) के छात्र टाइप राइटिङ्ग सीखना चाहते थे। उन्होंने कहा अगर ९६) का प्रबन्ध हो जाय तो वे ३ महीने में टाइप सीखकर रोजगार से लग सकते हैं। यह सूचना मिलने पर बिरला जी ने उतनी रकम भेज दी।

पेशावर का एक पठान आर्य समाज द्वारा शुद्ध करके हिन्दू बना लिया गया। उसका नाम था धर्म सिंह, उसकी तीन लड़कियों का विवाह हिन्दुओं में हो गया, पर उसके लड़के के साथ कोई हिन्दू अपनी लड़की का विवाह करने को तैयार न हुआ। तब जात-पाँत तोड़क मंडल के श्री सन्तराम जी ने इसकी चर्चा जुगल किशोर जी से की। उन्होंने कहा कि आप उसके विवाह की व्यवस्था करें तो मैं जितना रुपया आवश्यक होगा दे दूँगा। फिर भी कोई राजी न हुआ, तो 'बनिता आश्रम' से एक लड़की मिली। पर इस सम्बन्ध को धर्मसिंह ने स्वीकार नहीं किया। फिर भी सेठ जी ने उसके लड़के को कुछ रुपया दिया कि वह काबुल से सूखा मेवा मँगाकर व्यापार करे। उस काम में उसकी स्थिति काफी सुधर गई और फिर एक खत्री घराने में उसका विवाह भी हो गया।

वे इस प्रकार की आर्थिक सहायता करते समय मुख्यतः पात्र के गुण-दोषों को पर विचार करते थे। सहायता चाहने वाला उनका प्रशंसक है या नहीं इसका वे कभी ध्यान नहीं करते थे। इससे सिद्ध होता है कि उन्होंने अहंकार पर अधिकांश में अवश्य विजय पा ली थी। इसका एक नमूना श्री सन्तराम जी लिखित 'स्वानुभव' से भी मिलता है। वे लिखते हैं—

"सेठ जी जब लाहौर आये तो अन्य लोगों की तरह 'जात-पाँत तोड़क

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंडल' के लिये मैं भी उनके पास चन्दा के लिये गया । इस पर उन्होंने कहा, "देने वाला तो मैं अकेला हूँ और माँगने वाले अनेक आते हैं, मैं किस-किस को दूँ ?" इस पर मुझ से नहीं रहा गया, झट से बोल उठा—"सेठ जी, मैं अपने लिए नहीं माँग रहा हूँ, वरन् हिन्दू-समाज में से बद्ध मूलता और ऊँच-नीच का भेदभाव मिटाकर, सब हिन्दुओं को एकता और बन्धुता के सूत्र में संगठित करने वाली एक संस्था के लिए सहायता चाहता हूँ । आपके पास धन है और मेरे पास समय ! आपके धन का सदुपयोग हो, इसी से मैं आपके पास आया था । अन्यथा जिसने आपको धन दिया है, वह मुझे भी दे सकता था, मैंने उसका कुछ बिगाड़ा नहीं है ।"

"दूसरा कोई होता तो मेरी बात सुनकर क्रोधित हो जाता और मुझे चले जाने को कह देता । परन्तु वे शान्त रहे और पाँच सौ रुपया देने लगे । इस पर मैंने कहा कि—'आप यदि श्रद्धा पूर्वक दें तो मैं पाँच रुपया भी सधन्यवाद ले लूँगा । पर यदि आप मुझे भिखारी समझ कर पीछा छुड़ाने के लिये पाँच सहस्र भी दें तब भी मैं नहीं लूँगा ।"

"इस पर सेठ जी मुझे एक सहस्र का चेक देने लगे । उन दिनों वे पंजाब में जिस किसी को दान देते थे, गोस्वामी गणेश दत्त द्वारा ही देते थे । मुझे भी वे उन्हीं के द्वारा देने लगे । परन्तु मैंने गोस्वामी जी द्वारा लेने से इनकार करते हुए कहा कि "यदि आप गोस्वामी जी को विश्वासपात्र समझते हैं और मुझ पर आपका विश्वास नहीं तो इस दान को रहने दीजिये । तब उन्होंने वह एक सहस्र का चेक मेरे ही नाम से दे दिया ।"

धर्म समदर्शन के अनुयायी--

ये ही वे गुण हैं जिनके कारण हम प्रत्यक्ष में एक पूँजीपति होते हुए भी उनको महापुरुषों की श्रेणी में रखते है । उनके जीवन की सहस्रों घटनाओं को पढ़ने से यही प्रतीत होता है कि उनको अपने धर्म और समाज के उद्धार और उत्थान की हार्दिक लगन थी, और इसके लिए वे सदा प्रयत्नशील रहे । हमें उनके कार्यों में साम्प्रदायिकता का दोष भी नहीं जान पड़ता क्योंकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने बौद्धों, सिक्खों, जैन, आदि की भी अवसर आने पर सहायता की, अथवा उनके कार्यों में सहयोग दिया । इसके साथ ही अन्य किसी धर्म की न उन्होंने कभी निन्दा की, न निरादर । इस दृष्टि से विचार करने पर उनका हिन्दू-धर्म सम्बन्धी सिद्धांत वैसा ही व्यापक जान पड़ता था जैसा कि गांधीजी का । दिल्ली रहते समय वे सदैव गांधीजी से मिला करते थे और धर्म के सम्बन्ध में चर्चा भी करते रहते थे । उन्होंने धर्म के सम्बन्ध में गांधीजी की जो सम्मति महत्वपूर्ण समझी वह इस प्रकार है—

"मेरे लिये तो केवल एक धर्म है । वह है हिन्दू धर्म । मैं अपने को हिन्दू कहला कर अभिमान करता हूँ । मैं हिन्दू धर्म को जिस प्रकार समझता हूँ तदनुसार वह अत्यन्त व्यापक है । उसमें अन्य धर्मों के लिए समभाव है, आदर है ।"

इसी बात को सन्त बिनोबा भावे ने और भी खोलकर कहा है—

"मानव की शक्ति मर्यादित होती है, इसलिये सेवा का क्षेत्र भी मर्यादित हो सकता है, लेकिन वृत्ति मर्यादित नहीं रखनी चाहिये । सेवा का क्षेत्र चाहे मर्यादित हो, पर भावना का, सहानुभूति का क्षेत्र अमर्यादित रखना चाहिये । जाति, पन्थ, धर्म, वर्ण, के आधार पर मानवता के टुकड़े हो जाते हैं । सारे भेद तो देह के कारण पैदा होते हैं, इसलिये हमें यही ख्याल रखना चाहिये कि मैं एक परिशुद्ध आत्मा हूँ, देह नहीं हूँ । यदि हम मनुष्य को, मनुष्य के नाते नहीं देखेंगे, तो हिन्दू धर्म की आत्मा को ही खो बैठेंगे । हिन्दू धर्म तो समुद्र जैसा है, जो सबको अपने भीतर समा लेता है ।"

श्री जुगल किशोर जी भी हिन्दू-धर्म की इस आत्मा से परिचित थे और अपने अन्तरतम में इसी का लक्ष्य रखते थे । सामयिक परिस्थितियों और तरह-तरह की सहायता चाहने वालों के कारण चाहे उनको अधिक सम्पर्क हिन्दुओं से ही रखना पड़ता हो, पर वे उसी सत्य धर्म के अनुयायी थे जिसको संसार में सभी-ज्ञानी जनों ने 'एक' और 'सर्वोच्च' माना है । जब उनके एक सहकारी और भक्त श्री केजड़ीवाल जी ने एक दिन अपना भ्रम दूर करने के लिए उनसे पूछा कि धर्म क्या है ?' तो उन्होंने एक आन्तरिक स्मृति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथ कहा——

"जीव और प्रकृति का तादात्म्य ही 'सुन्दर' का सृजन करता है, सुन्दर की अनुभूति होने से 'समभाव' का बोध उत्पन्न होने लगता है। यह उत्प्रेरण ही 'धर्म-सम दर्शन' की भावना को उत्पन्न करती है। अभी तक धर्म के लिये 'सम दर्शन' से अच्छा शब्द मुझे और कोई दूसरा नहीं मिला है। यही सम दर्शन जब सीमित या रूढ़ हो जाता है तो उससे मत (मजहब) की सृष्टि होती है। मत-मतान्तर को हम तर्क कह सकते हैं, पर 'सुन्दर' नहीं कह सकते। सुन्दर तो केवल सुन्दर ही है—वही परमदर्शन है, वह जीव और प्रकृति का तादात्म्य है। यहाँ न तर्क की गुन्जाइश है न जिज्ञासा की——केवल है असीम विश्वास और समर्पण की भावना।"

इसी धर्म-समदर्शन की भावना से प्रेरित होकर जुगल किशोर जी ने धर्म प्रचार का कार्य भारत से भी अधिक विदेशों में किया। योरोपियनों तथा अमरीकनों को भी उन्होंने इस कार्य में सहायता दी। वास्तव में उनके 'धर्म' के क्षेत्र में समस्त मानव आ जाते थे। उनसे वार्तालाप करके देश के एक प्रतिष्ठित विद्वान और हिन्दू-संस्कृति के ज्ञाता डा० सूर्य नारायण व्यास (उज्जैन) ने लिखा है—

"श्री जुगल किशोर जी से मिलकर मुझ पर सर्व प्रथम उनके वैभव-विरक्त साधु रूप की ही छाप पड़ी। अत्यन्त सौम्य, अत्यन्त सज्जन और भोले--भाले दिखाई देने वाले सेठ जी, किन्तु उनमें ज्ञान की गम्भीरता, हिन्दुओं के प्रति उत्सर्ग की भावना एवं अन्तर की लगन को देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। जब ज्ञान-विज्ञान की चर्चा चल पडी, तब जान पड़ा कि वह वैभव शाली सन्यासी केवल भावुकता वश ही उदार नहीं है. विचार से उदात्त है और अनुभव भी अपार है। उनका अध्ययन गहराई लिये है, और सरलता में विद्वता छिपी हुई है। उनकी सादगी में चिन्तन का व्यक्तित्व है। उनकी दानशीलता लक्ष्यहीन नहीं है। विचार और तर्क शुद्ध है। आडम्बर और प्रचार से परांमुख श्री बिरला जी सच्चे गुण ग्राहक और गुणान्वेषी थे। उनका अपना एक लक्ष्य—उद्देश्य था और उस पर उनका समस्त जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्वासपूर्वक उत्सर्ग था। इसमें सन्देह नहीं कि वे स्वयं एक जीवित संस्था थे। वे आध्यात्मिक महापुरुष थे जिन्होंने वेद भगवान के कथनानुसार दो हाथों से उपार्जित कर अनेक हाथों से उसे सत्कर्मों में वितरण किया।

विदेशों में धर्म प्रचार—

विदेशों में धर्म-प्रचार का प्रश्न कई दृष्टिकोणों से विचारणीय हैं। वैसे तो हम प्रायः उन ईसाई मिशनरियों की विपरीत आलोचना किया करते हैं, जो हमारे देश में अपना धर्म प्रचार करते आते हैं, और कुछ वर्षों में लाखों आदिम जातियों के लोगों को अपने धर्म में दीक्षित कर चुके हैं। किसी समय मुसलमानों ने अपना धर्म तलवार के जोर से अनेक देशों में फैला दिया था। इस प्रकार धर्म प्रचार, जो दूसरे लोगों को बलपूर्वक या बहकाकर अपने धर्म में शामिल करने के लिये किया जाता है, अवश्य ही आक्षेपजनक कहा जायेगा।

श्री जुगल किशोर जी ने विदेशों में जो हिन्दू-धर्म का प्रचार किया, वह अन्य धर्म वालों को किसी अवाञ्छनीय तरीके से हिन्दू-धर्म में शामिल करने के लिये नही था, वरन् वहाँ बसे हुये हिन्दू-धर्मानुयाओं को हिन्दू धर्म ग्रन्थों मन्दिरों और अन्य प्रथा-परम्पराओं की जानकारी देकर मातृभूमि के सम्पर्क में लाना था। अनेक टापुओं में भारत से जाकर कितने ही हिन्दू धर्मानुयायी बहुत पहले बस गये थे। वहाँ भिन्न वातावरण में रहने तथा धार्मिक विषयों की जानकारी का कोई ठीक साधन न होने से उनकी श्रद्धा दिन पर दिन क्षीण पड़ती जाती थी। बिरला जी ने वहाँ हिन्दू-धर्म के उपदेशक तथा धर्मग्रंथ देव-मूर्तियाँ आदि सामग्री भेजकर उन लोगों की धार्मिक श्रद्धा को पुनः सुदृढ़ बनाने की चेष्टा की।

हिन्दू-धम की यह विशेषता है कि उसने कभी किसी अन्य धर्म का अहित नहीं सोचा और न धार्मिक सिद्धान्तों में अन्तर होने के कारण कभी किसी अन्य धर्मानुयायी के साथ दुर्व्यवहार किया। इसके विपरीत इतिहास के लम्बे समय में जब कभी यहूदी, पारसी, ईसाई अपने देशों से निष्काषित होकर यहाँ आ गये तो उनका एक अतिथि की भांति स्वागत सत्कार ही किया। आज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कितने ही लोग हिन्दुओं की मनोवृत्ति को उनकी निर्बलता अथवा मूर्खता बतलाते हैं, पर वे स्वयं हिन्दू धर्म के मूल तत्व से अनजान हैं। इस धर्म के प्रणेता तो आरम्भ में ही कह चुके हैं कि 'भगवान एक है। विभिन्न धर्म उस तक पहुंचने के पृथक-पृथक मार्ग हैं। आप किसी भी मार्ग से चलें, अन्त में पहुँचेंगे एक ही स्थान पर'। इस प्रकार की भावना वाला व्यक्ति किस प्रकार किसी अन्य धर्मी को निन्दनीय अथवा अपना विरोधी मान सकता है? इसी तथ्य को श्री जुगल किशोर जी ने गाँधी जी के मुख से सुना था और उनके लेखों में पढ़ा था। हिन्दू धर्म की गरिमा का बखान करते हुये गाँधी जी ने 'हरिजन' के एक लेख में कहा था—

"जिस प्रकार पाश्चात्य देशों ने भौतिक पदार्थों के आश्चर्यजनक आविष्कार किये हैं उसी प्रकारहिन्दुत्व ने उनसे भी अधिक विलक्षण आविष्कार धर्म, जीवन तथा आत्मा के सम्बन्ध में किये थे। किन्तु ऐसे महान एवं सुन्दर आविष्कारों को देखने के लिये हमारे यन्त्र नहीं हैं। पाश्चात्य विज्ञान द्वारा की गई उन्नति से हमारी आँखें चौंधिया गई हैं। मैं उससे प्रभावित नहीं हूँ। वस्तुतः ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर ने अपनी बुद्धिमानी से उस दिशा में उन्नति करने से भारत को रोक दिया है, जिससे बढ़ते भौतिकवाद का नियंत्रण या निराकरण करने के अपने विशेष उद्देश्य में वह सफल हो सके। हिन्दुत्व में कोई बात अवश्य है जो अब तक उसे जीवित रखे हुए है। इसने बेबीलोन, सीरिया, फारस और मिश्र की सभ्यताओं का पतन देखा है।

'अपने चारों ओर दृष्टि डालिये। रोम कहाँ है? और कहाँ है ग्रीस (यूनान) वह संसार प्रसिद्ध यूनानी सभ्यता कहाँ गई? अब भारत आइए। यहाँ का अति प्राचीन कोई ग्रंथ या वर्णन पढ़िये और फिर चारों ओर दृष्टि डालिए, तो आपको विवश होकर कहना पड़ेगा कि हाँ, प्राचीन सभ्यता यहाँ अब भी जीवित है। यह सत्य है कि यत्र-तत्र कूड़े-करकट के ढेर भी हैं किन्तु उसके नीचे अतुल भंडार दबा पड़ा है। भारतीय सभ्यता के जीवित रहने का एकमात्र कारण यही है कि भारत का लक्ष्य भौतिक उन्नति नहीं वरन् आध्यात्मिक उन्नति था।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी तथ्य को श्री जुगल किशोर जी ने अच्छी तरह हृदयंगम किया था और अपनी परिस्थिति के अनुसार घर में और बाहर उसके प्रचार का यत्न किया था। उन्होंने देखा कि प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने एशिया के दूरवर्ती भागों में अपने धर्म तथा संस्कृति का सन्देश भेजकर वहाँ के निवासियों में हिन्दुत्व की जो भावना उत्पन्न की थी वह अब उस सम्पर्क-सूत्र के टूट जाने से निष्प्राण होती जा रही है। यह देखकर उनके हृदय को व्यथा पहुँची और उन्होंने हिन्दू धर्म के सन्देश को पुनः उन स्थानों में पहुँचाने के लिये प्रबल प्रयत्न आरम्भ किया। उनके प्रयत्नों को कहाँ तक सफलता मिली इस सम्बन्ध में कुछ प्रकाश उन सम्मतियों से पड़ता है, जो उनके निधन होने के पश्चात् प्रमुख व्यक्तियों ने प्रकट की थीं। संसद-सदस्य श्री एन० सी० चटर्जी ने कहा था—"स्वर्गीय जुगलकिशोर बिरला न केवल दानवीर थे, प्रत्युत हिन्दू-धर्म के दीवाने थे। देश-विदेश में हिन्दू-धर्म के प्रचार के लिये जितना काम उन्होंने किया, उतना और किसी ने नहीं किया।"

दूसरे संसद सदस्य श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा था—"बिरला जी के हृदय में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये जबर्दस्त तड़प थी। उन्होंने विदेशों में हिन्दू-धर्म के प्रचार के लिये सब तरह का सहयोग दिया।"

हिन्दू-धर्म के महान सन्देश को दूरवर्ती टापुओं और प्रदेशों में पुनर्जीवित करने के लिये उन्होंने वहाँ पर जगह-जगह मन्दिर बनवाये, स्तूप, विहारों का निर्माण कराया, भारत की ओर से धर्म-ग्रन्थों, मूर्तियों और अन्य पदार्थों के बहुमूल्य उपहार भेजे और अपनी ओर से विशेष प्रचारकों को भेजकर उनसे सम्पर्क स्थापित किया। इन सब प्रयत्नों से उनका उद्देश्य यही था कि वहाँ के निवासियों में हिन्दू-धर्म की भावना और भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव जीवित बना रहे।

बौद्ध देशों से सम्बन्ध स्थापित—

स्व० बिरला जी ने विभिन्न देशों के बौद्ध-धार्मियों से अपने विशेष दूत भेजकर और पत्र व्यवहार करके घनिष्ठता उत्पन्न की थी उसका कारण यही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था कि वे हिन्दू और बौद्धधर्मो को एक ही वृक्ष की दो शाखायें मानते थे। इसमें सन्देह नहीं की बौद्ध धर्म मूलतः भारतीय है, उस पर भारतीय धर्म सिद्धान्तों का पूरा प्रभाव पडा और इसी आधार पर भगवान गौतम बुद्ध को हिन्दुओं के दस प्रधान अवतारों में सम्मिलित कर लिया गया है। इस लिये बिरला जी बौद्धों को हिन्द ही मानते थे और उन्होंने दिल्ली के बिरला मन्दिर में बुद्ध भगवान का भी एक दर्शनीय मन्दिर निर्माण कराया था। और भी अनेक स्थानों में उन्होंने बौद्ध स्तूप, बिहार, तथा अन्य संस्थाओं की स्थापना कराई। नेपाल के बौद्धों में ईसाई और मुसलमानों की तरफ से उन्हें अपने साथ मिलाने का प्रयत्न होते देखकर उनको चिन्ता हुई थी और उन्होंने वहाँ के एक कार्यकर्त्ता को लिखा था "बौद्ध और हिन्दू दोनों एक ही वृक्ष की शाखाएँ हैं और सहोदर भाइयों के समान हैं। नेपाल में बौद्ध और हिन्दू इस तरह घुल-मिल गये हैं कि बहुत काल से दोनों में विवाह-सम्बन्ध होते आये हैं। अतएव जो लोग स्वार्थवश बौद्धों और हिन्दुओं को अलग करना चाहते हैं वे दोनों के शत्रु हैं।"

बर्मा के सम्बन्ध में जब उनको मालूम हुआ कि वहाँ बंगाल के मुसलमान बड़ी संख्या से जाकर बस गये हैं और वहाँ बर्मी महिलाओं से विवाह करके अपनी निरन्तर वृद्धि करते जाते हैं, तो उन्होने वहाँ के 'बुद्धिष्ट महासंघ' के अध्यक्ष को एक पत्र में लिखा था--

"बर्मा के बौद्ध हमारे भाइयों के समान हैं। राजनीतिक रूप से भिन्न होते हुये भी धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से बर्मा के बौद्ध और भारत के हिन्दू एक ही परिवार के दो सदस्यों के समान हैं। अतएव बर्मा के जो बौद्ध भाई तीर्थ-यात्रा के लिये भारत आवें, उनका स्वागत-सत्कार करना हमारा आवश्यक कर्त्तव्य है। यहाँ पर हम आपका ध्यान बर्मा में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई 'जहर वादियों' (मुससलमानों और बर्मी स्त्रियों से उत्पन्न सन्तान) की संख्या की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। कुछ वर्ष पहले उनकी संख्या केवल २-३ लाख थी, पर ऐसी खबर मिली है कि वे बढ़कर दस लाख हो गये हैं ऐसी बात है तो यह बर्मा के लिये बहुत अहितकर सिद्ध होगी। भारत का उदाहरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आपके सामने हैं। इसी प्रकार अपनी संख्या बढ़ाकर देश को विभाजित कर दिया, और 'पाकिस्तान' बना डाला।"

तिब्बत से भारत आने वाले यात्रियों को श्री बिरला जी समय-समय पर ठहरने आदि की अच्छी सुविधा दिया करते थे। वहाँ के एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने उनको लिखा—

"ल्हासा बौद्धमत का एक बड़ा केन्द्र स्थान है। यहाँ बड़े-बड़े मठ हैं जिनमें भारतवर्ष से लाये गये अनेक धर्म ग्रन्थ सुरक्षित हैं। तिब्बत निवासी इनको बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। ल्हासा के बहुत से निवासी, जो भारत में तीर्थ करने जाते हैं, वहाँ से लौट कर आपका शुभ नाम लेते हैं और आपकी प्रशंसा करते हैं। आपकी कृपा से वहां तीर्थ-यात्रा को जाने वालों को बड़ा आराम मिलता है।"

जापान के लिये सजीव उपहार—

जापान के कुछ बौद्ध धर्मियों के अनुरोध पर बिरला जी की तरफ से दो गायें जिनके नाम 'नन्दिनी' तथा 'कल्याणी' थे एक साँड जिसका नाम 'धर्म' रखा गया था, एक हाथी 'सुख मंगल' उपहार स्वरूप भेजे गये। जहाज के जापान पहुंचते ही गायों का जापानियों द्वारा बड़ी धूम-धाम से स्वागत किया गया, जिसमें लगभग ५० हजार व्यक्तियों ने भाग लिया। बाद में उनका एक बड़ा जुलूस निकाल कर उनको एक बौद्ध मन्दिर में रखा गया। इसी प्रकार हाथी के जलूस में राजवंश के प्रिन्स ताका मात्सू और टोकियो के मेयर आदि प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

बिरला जी के इस उपहार का प्रभाव जापानियों पर बहुत अच्छा पड़ा और कितने ही लोगों ने भारत के प्रति श्रद्धा और प्रेम के भाव प्रकट करते हुए बिरला जी को पत्र लिखे। जापानी भिक्षु इमाई ने, जो कलकत्ते में रहते थे, अपने पत्र में लिखा—

"दिल्ली में आपके साथ मिलकर बड़ा आनन्द हुआ। जापान में विश्व-शान्ति सम्मेलन होने वाला है, उसके लिये मैं यहाँ यथाशक्ति प्रयत्न कर रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हूँ। आप ने कहा था कि आप उस सम्मेलन में एक सन्देश भेजेंगे। मेरे विचार में आपकी तरफ से एक सदस्य भेजना अच्छा होगा, क्योंकि आप जापान में बौद्ध-धर्म की रक्षा के लिये बहुत सहायता देते आ रहे हैं। जापान के बौद्ध आपका विशेष आदर करते हैं।"

बाली द्वीप के बीस लाख हिन्दू—

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारतवर्ष से कई हजार मील के फासले पर एक ऐसा टापू है जहाँ पिछले एक हजार वर्षों से हिन्दू-धर्म का प्रचार निरन्तर चला आता है। यह है इण्डोनेशिया का 'बाली' द्वीप। इसकी आबादी इस समय २० लाख है जिसमें से कुछ हजार को छोड़कर शेष सब हिन्दू हैं। ये लोग भारतीय वर्ण अवस्था के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-चार वर्णों में बँटे हैं। इन लोगों का नैतिक चरित्र उत्तम है। पुराण, रामायण, महाभारत आदि ही बाली निवासियों के पवित्र धर्म-ग्रन्थ हैं। वे लोग अपने सनातन धर्म तथा प्राचीन संस्कृति में भारतवासियों की ही भाँति अटल निष्ठा रखते हैं। वहाँ के एक विद्वान श्री पुण्यात्मज ने बिरला जी को उस प्रदेश के निवासियों के विषय में लिखा था।

"बाली वासियों की प्रथा है कि वे यज्ञ आदि के लिये धन एकत्र करते हैं, न कि अपने आराम के लिये। बाली के लोग तब तक अपने को सफल नहीं मानते, जब तक उनकी सम्पत्ति का दो तिहाई भाग पितृयज्ञ, देवयज्ञ और भूतयज्ञ में न लग जाय। वैदिक और ब्राह्मण ग्रन्थों से पोषित अध्यात्मवाद का अस्तित्व बाली में शिला की भाँति अचल है। यही कारण है कि आज भी बाली अपने यज्ञ—त्याग के कृत्यों द्वारा सारी विपन्नता के होते हुए इण्डोनेशिया में सर्वाधिक उन्नतिशील माना जाता है। वहाँ के सभी मन्दिर राज्य-सरकार द्वारा संरक्षित हैं और उनकी मरम्मत पर पर्याप्त व्यय किया जाता है। अगर सरकार ऐसा न करे तो सारी जनता हड़ताल कर दे और अमीर से गरीब तक कोई भी एक पैसा टैक्स न दे।"

इस पत्र का उत्तर देते हुए बिरला जी ने लिखा था—"यह जानकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परम प्रसन्नता हुई कि बाली के हमारे हिन्दू भाई अभी भी हिन्दू धर्म का उसके प्राचीन और विशुद्ध रूप में अनुसरण कर रहे हैं। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हम हिन्दुओं का बाली के हिन्दुओं के प्रति महान् कर्तव्य है, परन्तु यह कहते हुए हमें लज्जा होती है कि हमने उस कर्तव्य का पालन नहीं किया। मैंने तो उनके लिये जो कुछ किया है वह उस कर्तव्य का हजारवाँ हिस्सा भी नहीं है, जो मुझे करना चाहिये था।

श्री नरेन्द्र देव पंडित लाहौर में प्रोफेसर थे। भारत विभाजन के पश्चात् वे बाली में जाकर बस गये और वहां के लोगों में भारतीय धर्म का प्रचार करने लगे। उन्होंने देखा कि यद्यपि वहाँ हिन्दू-धर्म अभी तक प्रचलित है, पर विद्या के अभाव से बहुसंख्यक लोग भारत की ही तरह धर्म के वास्तविक रूप को भूल गये हैं और केवल रूढ़ियों का पालन कर रहे हैं। पण्डे, पुरोहित भी स्वयं धर्म-शास्त्रों को बहुत कम जानते हैं और केवल पेट पालने के लिये उल्टे-सीधे ढंग से पूजा, संस्कार आदि करा देते हैं। उन्होंने बाली की भाषा का अच्छी तरह अध्ययन करके वहाँ 'भुवन सरस्वती' नामक संस्था स्थापित की और उसमें विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा और हिन्दू-धर्म का अध्ययन कराने लगे। सन् १९५४ में उसमें १५० के लगभग विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे। श्री नरेन्द्र देव ने बिरला जी से इस कार्य में सहायता देने की अपील की तो कई वर्ष २०० रु० प्रति मास की सहायता 'भुवन सरस्वती' को दी जाती रही। हिन्दू-धर्म, दर्शन, भारतीय संस्कृति सम्बन्धी बहुसंख्यक पुस्तकें भी भेजी गईं। इसके अतिरिक्त वहाँ के विद्यार्थियों के लिये एक 'संस्कृत-प्राइमर' भारत में छपवाकर वहाँ भेज दी गई।

मारीशस और फिजी द्वीप—

मारीशस में तीन-लाख हिन्दू रहते हैं जो पिछले सौ वर्षों में वहाँ जाने वाले भारतीयों की सन्तान हैं। आरम्भ में तो ये लोग मेहनत, मजूरी, और कुलीगीरी के लिये वहां भेजे गये थे, पर अब उन्नति करके डाक्टर, बैरिस्टर और उच्च सरकारी नौकर बन गये हैं। यद्यपि स्थानीय परिस्थितियों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारण उनके रीति रिवाजों में कुछ अन्तर पड़ गया है, तो भी अधिकांश व्यक्ति सनातन धर्म का ही पालन कर रहे हैं। वहाँ शिवजी, राधाकृष्ण, राम, हनुमान, दुर्गा आदि के अनेक मन्दिर हैं। पहले तो मन्दिरों का खर्च पंचायत की तरफ से किया जाता था, पर अब सरकारी तरफ से भी कुछ सहायता मिलने लग गई है, जो वहाँ के पुजारी को वेतन के रूप में दे दी जाती है। प्रत्येक मन्दिर में एक हिन्दी पाठशाला भी स्थापित है। वाल्मीकि रामायण, शिवपुराण, सत्यनारायण की कथायें भी होती हैं।

बिरला जी ने मारीशस में हिन्दू धर्म के प्रचार में सहायता करना उपयोगी समझ वहाँ के 'कल्याण नाथ सनातन धर्म टेम्पल ऐशोसियेशन' के एक मन्दिर के लिये ८ मूर्तियाँ, तीन संगमरमर पर लिखे पट्ट, १० देवी देवताओं के सुन्दर चित्र फ्रेम और शीशा में मढ़े हुए और बहुत-सी हिन्दी तथा अंगरेजी की धार्मिक पुस्तकें भेजीं। सभा ने सब चीजों के सुरक्षित पहुंच जाने पर बिरला जी को लिखा—"हम प्रवासियों पर आपने जो उपकार किया है उसके लिये धन्यवाद देने के लिये हमारे पास कोई शब्द नहीं हैं।"

फिजीद्वीप में भी दो लाख हिन्दू रहते हैं, जो सन् १९१६ तक शर्तबन्द कुली-प्रथा के बन्धनों में पड़े अत्यन्त हीन जीवन व्यतीत कर रहे थे। महामानव एण्डरूज साहब के अथक प्रयत्नों से उनका उद्धार हुआ और आज वे ही उस द्वीप के प्रधानकर्ता-धर्ता हैं। वे भारत और यहाँ की संस्कृति से सम्बन्ध बनाये रखने के इच्छुक हैं और इसलिये जब कभी संभव होता है अपने कुछ छात्रों को भारतीय विद्यालयों, जैसे गुरुकुल काँगड़ी, हिन्दू विश्वविद्यालय आदि में भेज कर शिक्षा दिलवाते हैं। कुछ छात्रायें भी कन्या महाविद्यालय जालन्धर में आकर शिक्षा प्राप्त करती हैं। ये सब फिर फिजी पहुँच कर वहाँ शिक्षक का कार्य करके अन्य लोगों को भारतीय धर्म तथा संस्कृति का ज्ञान प्रदान करते हैं। फिजी के 'सेण्ट्रल इंडिया आर्गेनाइजेशन' के अध्यक्ष श्री विष्णु देव ने बिरला जी से इस कार्य में सहायता देने की प्रार्थना की तो उन्होंने दो छात्रों को हिन्दू विश्व विद्यालय, काशी में रहकर हिन्दू धर्म, संस्कृति, आचार तथा संस्कृत भाषा का अध्ययन करने के लिये उनका समस्त व्यय देना स्वीकार किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके अतिरिक्त सामाबूला नगर की 'रामायण मंडली' के मन्दिर के लिये बिरला जी ने श्री राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान की चार सुन्दर मूर्तियाँ भी प्रदान की, जो वहाँ एक बड़े उत्सव के साथ वेद मन्त्रों द्वारा पूजा करके प्रतिष्ठित की गईं।

जब दक्षिण अफरीका में एक 'आर्य-मन्दिर' बनाने का काम बीच में ही रुक गया तो वहां के नेता श्री भवानी दयाल सन्यासी ने जो उन दिनों भारत में ही धर्म-प्रचार करने लगे थे, बिरला जी को पत्र लिख उस कार्य सहायता करने की प्रार्थना की। इस कार्य में उन्होंने सहयोग प्रदान किया। साथ ही दक्षिण अफरीका के प्रधान नगर'डरबन' के आर्य समाज मन्दिरके लिये वेद-मन्त्र खुदे हुये कई शिला-पट्ट भेजे गये। पूर्वी अफरीका में धर्म-प्रचार के लिये आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री चांदकरण शारदा को भेजा गया। इस अवसर पर बिरला जी ने शारदा जी को जो पत्र भेजा उससे विदित होता है कि हिन्दुत्व की रक्षा और विस्तार की उन्हें सदैव कितनी चिन्ता रहती थी—

"आप पूर्वी अफरीका के हिन्दू नेताओं से यह निवेदन करें कि वे मुसलमानों को संतुष्ट करने की नीति के अनुसार अपने को 'हिन्दूस्तानी' कहने का मोह छोड़कर 'हिन्दू' शब्द को अपनावें। उनके ध्यान में यह बात अंकित रहनी चाहिये कि मुसलमानों को संतुष्ट करने की भावना का परिणाम भारत में क्या हुआ? आर्य समाजी और सनातनी का भेदभाव भी हिन्दू-संगठन के लिये घातक है। दोनों को उदार होना चाहिये, ऐसा प्रचार आपके द्वारा किया जाना चाहिये।" पर अपने धर्म प्रचार का आग्रह होने पर भी हिन्दू-धर्म के सम-भाव सिद्धान्त के अनुसार वे दूसरों पर ऐसे आक्षेप करना उचित नहीं समझते थे, जिससे किसी को बुरा जाग पड़े या दिल दुखे। इसलिये आपने पत्र के अंत में इस बात का भी संकेत कर दिया—

एक बात का और भी ध्यान रखना चाहिये कि सार्वजनिक भाषणों में आप जो कुछ भी मुसलमानों या और किसी के सम्बन्ध में कहें, तो मीठे शब्दों में ही बोलें। कटु शब्दों में कही गई वस्तु का प्रभाव उतना अधिक नहीं रहता।'

अण्डमान टापू (काला पानी) के पास कचाल नामक एक टापू है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसमें आदिवासी जाति के लोग रहते हैं, जो कुछ समय पहले तक हिन्दू माने जाते थे। पर गत द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् इंगलैण्ड और अमरीका के ईसाई पादरियों ने उस तरफ ध्यान दिया और वहाँ की ६०० की जनसंख्या में से ४०० को ईसाई बना लिया। उन्होंने वहाँ अपने दो पक्के गिर्जाघर भी बनवाये। यह देखकर वहाँ के आदिवासियों की नेता रानी चंगा ने श्री बिरला जी को पत्र भेजा कि "यदि इन आदिवासियों के लिये एक मन्दिर बनवा दिया जाय तो उनको अपने धर्म का कुछ परिचय मिलता रहे और उनकी रुचि अपनी प्राचीन संस्कृति की तरफ बनी रहे।" बिरला जी ने इस कार्य के महत्व को अनुभव करके वहाँ एक मन्दिर का निर्माण कराने के लिये आवश्यक सहायता दी जिससे वहाँ के निवासियों में धर्म-प्रचार का कार्य होने लगा है। अण्डमान और निकोबार में भी उन्होंने पुराने मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, यद्यपि वहाँ की १५००० आबादी में से १२००० को ईसाई बनाया जा चुका है और शेष ३ हजार को भी अपने सम्प्रदाय में शामिल करने की ईसाई मिशनरी पूरी कोशिश कर रही हैं।

प्रवासी महिलाओं में भारतीय वेषभूषा का प्रचार

दक्षिण अमरीका के समीप ब्रिटिश गायना, डच गायना और ट्रिनिडाड आदि में हिन्दुओं की एक बड़ी संख्या निवास करती है। पर बहुत समय से विदेशियों के सम्पर्क में रहने और भारतवर्ष आना-जाना कम हो जाने पर उनमें हिन्दुत्व का भाव क्षीण होने लग गया था। यह मालूम होने पर जुगलकिशोर जी ने वहाँ के धार्मिक कार्यकर्ताओं से पत्र व्यवहार करके कई छात्रों को भारत बुलाकर धार्मिक शिक्षा दिलवाई और वहाँ की अनेक संस्थाओं को धार्मिक पुस्तकें आदि भी भेजी गईं। वहाँ से आने वाले छात्रों में एक श्री रघुनाथ थे जिन्होंने गायना वासी हिन्दुओं की अवस्था का परिचय देते हुए बतलाया—

"वहाँ आर्य समाजियों और सनातन धर्मियों में प्रायः शास्त्रार्थ हुआ करते हैं। लोग बहुधा भारत से ग्रंथ मँगाकर पढ़ा करते हैं। पुराने लोगों में वर्ण व्यवस्था अब तक है। वर्ण केवल चार हैं उपजातियों से कोई मतलब नहीं। शादी-विवाह धीरे-धीरे वर्णसंकरता को प्राप्त होते जा रहे हैं। खान-पान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में कोइ परहेज (छुआछूत नहीं है। जिसकी जहाँ इच्छा होती है खाते-पीते हैं परन्तु पुराने लोगों में कुछ विचार अवश्य है। तलाक-प्रथा चलती है। विवाह आदि संस्कार वेद विहित होते हैं श्रावण मास में 'भागवत्-सप्ताह' तथा यज्ञ हुआ करते हैं। रामलीला, रासलीला आदि प्रायः हुआ करती है। कथा पूजा, कृष्णजन्माष्टमी तथा रामनवमी पर्व विशेष रूप से मनाये जाते हैं। हिन्दुओं का कोई खास मन्दिर नहीं है। रामायण, महाभारत की कथा लोग बड़े प्रेम से सुना करते है। पुराने हिन्दू अब भी धोती–कुर्ता पहिनते हैं। औरतें साड़ीनुमा लँहगा, कुरती तथा ओढ़नी का व्यवहार करती हैं। विवाह माता-पिता करवाते हैं। घर में साधारण हिन्दी बोली जाती है।"

गायना के एक शिक्षा प्रचारक श्री जी आर द्वारका ने बिरला जी से भारत में रहने का व्यय दिये जाने पर श्री रमेश एल० किशुन नामक छात्र को यहां भेजा। उन्होंने अपने पत्र में लिखा—'अब यहाँ छात्र आपके हाथों में समर्पित है। वहाँ उन्हें अपना ऐसा व्यक्तित्व निर्माण का अवसर प्राप्त होगा जिससे वे गयना के सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर सकें। वर्षों तक मैं इस चेष्टा में रहा कि हमारे यहाँ की धार्मिक संस्थाएँ अपने युवकों को भारत भेजकर धर्म को शिक्षा दिलाने का यत्न करें। किन्तु किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अन्त में मैंने स्वयं ही व्यक्तिगत रूप से आप के आगे अपनी प्रार्थना उपस्थित की और आपने उसे स्वीकार कर लिया।"

ट्रिनिडाड से भारतीय राजदूत श्री आनन्द मोहन सहाय ने बिरला जी को पत्र में लिखा कि बड़ी लज्जा से कहना पड़ता है कि यहाँ की हिन्दू-स्त्रियाँ साड़ी पहनना भूल गई हैं और ईसाई, नीग्रो आदि जातियों की तरह गाउन और शार्ट ड्रेस (स्वल्प वस्त्र) धारण करने लग गई हैं। अब जो भारत सेवाश्रम मिशन के ब्रह्मचारी राजकृष्ण यहाँ आये हैं, वे हर उपदेश में भारतीय नारियों से साड़ी धारण करने को कहते हैं। साड़ी द्वारा ही वे इस पश्चिमी गोलार्द्ध में ईसाई, चीनी, नीग्रो आदि जातियों के बीच अपनी भारतीय विशेषता को अक्षुण्ण रख सकती हैं। स्वामी जी के उपदेशों से प्रभावित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होकर महिलायें हमसे साड़ियों की माँग करने लगी हैं। परन्तु यहाँ उनका प्रचार न होने से अभी तक हमने कभी भारत से साड़ियाँ मँगाई ही न थीं। आशा है भविष्य में यहाँ की हिन्दू स्त्रियाँ साड़ी एवं अन्य भारतीय पहिनावे को प्रश्रय देंगी।"

इस पत्र के उत्तर में बिरला जी ने लिखा कि पचास सूती साड़ियां भेजने के लिए 'केशाराम काटन मिल, कलकत्ता' को लिख दिया गया था और उन्होंने भेजना स्वीकार भी कर लिया था, पर सरकारी बन्धनों के कारण उनके भेजने में देर हो रही है।" कुछ समय बाद ये साड़ियाँ ट्रिनिडाड पहुँच गईं और स्त्रियों के भारतीय वेष-भूषा में रहने से वहाँ का सामाजिक वातावरण बदलने लग गया।

विदेशियों से सम्पर्क—

स्व० जुगल किशोर जी केवल प्रवासी भारतवासियों में ही धर्म-प्रचार करके सन्तुष्ट न हो गये, वरन् हिन्दुत्व के प्रेमी विदेशियों से भी सदैव पत्र व्यवहार द्वारा तथा अन्य प्रकार से सहयोग देकर सम्पर्क बनाये रहते थे और उनको धर्म-प्रचार में भाग लेने की प्रेरणा देते थे। अथवा जहाँ कहीं किसी को हिन्दू तथा बौद्धों के मुकाबले में ईसाईयों आदि को प्रोत्साहन देते देखते थे तो उसको भी विरत करने की चेष्टा करते थे।

श्री फिलिप सिंगार नामक अंग्रेज भारत में हिन्दू सभ्यता तथा संस्कृति का अध्ययन करने आये थे। जब वे अपने देश को लौट गये तो बिरला जी ने उनको एक पत्रोत्तर में लिखा था—

'यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप हिन्दू धर्म के उच्च आदर्श, उदात्त सिद्धान्तों और वेदान्त दर्शन से प्रेरित होकर पच्छिम में आर्य-हिन्द सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे है, तथा कला और साहित्य को आपने अपना कार्य-क्षेत्र बनाया है। आप स्वयं जानते है कि कला और साहित्य बिना आध्यात्मिक आधार के उसी प्रकार निरर्थक हैं जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर।विशेषकर प्राचीन भारतीय कला और साहित्य तो आध्यात्मिक आदर्शों से ओत-प्रोत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है और उनकी पृष्ठ-भूमि धर्म है, जैसे कि अजन्ता, एलोरा, ऐलीफैण्टा आदि की कला-कृतियों तथा वेद से लेकर आधुनिक संस्कृत वाङ्मय से सिद्ध है।

एक फ्रांसीसी महिला डी० डिला नाय भारत में डी-लिट् की परीक्षा देने आई थी। वह हिन्दी भी बहुत अच्छी तरह जानती थी। यहाँ आकर वह भारतीय धर्म से बहुत प्रभावित होकर बौद्ध भिक्षुणी होगई और दार्जिलिङ्ग में रहकर तिब्बती भाषा सीखने लगी। उसने बिरला जी को लिखा—

"अभी मैं तिब्बती भाषा सीख रही हूँ। सभ्यता के क्षेत्र में भारत और तिब्बत का सम्बन्ध बहुत प्राचीन व महान है। कलकत्ता विश्वविद्यालय से मुझे गतवर्ष छात्रवृत्ति मिली थी, पर वह इसवर्ष बन्द है। मैं बुद्ध भगवान के नियमानुसार भिक्षा के लिये जाती हूँ, किन्तु कभी-कभी यह भी नहीं हो सकता। स्त्री होने के कारण यह कार्य और भी मुश्किल है। मैं धर्मशाला अथवा मन्दिरों में पुरुषों तथा भिक्षुओं के साथ नहीं रह सकती। मैं निर्धनता से नहीं डरती संन्यासी का धनी होना अच्छा नहीं है, मैं सिर्फ यह चाहती हूँ कि मेरा काम चल सके। भारत मेरे लिये दूसरी मातृ-भूमि है।" इस पत्र को पाकर बिरला जी ने अपने द्वारा स्थापित 'आर्य धर्म सेवा संघ' द्वारा उक्त महिला को कई बर्ष तक छात्र वृत्ति दिलाई थी।

भारतीय संस्कृति और जर्मनी—

जर्मनी के श्री. गेश ने बिरलाजी को पत्र में लिखा कि, "मैं हिन्दू-धर्म और हिन्दी का अध्ययन करने गीता प्रेस गोरखपुर में आ रहा हूँ। अगर आप छः महीने के लिये एक छात्र वृत्ति मुझे दे सकें तो बड़ी सुविधा हो जायगी।

बिरला जी ने उत्तर में लिखा कि-"आप हिन्दू संस्कृति और धर्म का यथेष्ट ज्ञान तो जर्मनी में रहकर ही प्राप्त कर सकते हैं। इस उद्देश्य से मैं कुछ भारतीय धर्म-ग्रन्थ आपके पास भिजवा रहा हूँ। अगर आप संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करलें तो आध्यात्मिक ज्ञान का अनन्त भंडार आप हस्तगत कर सकते हैं। आपके देश में संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान मैक्सूलर, डायसन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेबर आदि हो गये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा की बड़ी सेवा की हैं। इसके लिये हम उनके आभारी हैं।

"संसार में जितने मतमतान्तर 'धर्म' के नाम से प्रचलित हैं उनमें आर्य (हिन्दू) धर्म के सबसे प्राचीन है। यह किसी एक जाति या एक देश के लिये सीमित नहीं है, और न यह किसी विशेष व्यक्ति या उसके रचे ग्रन्थ पर अवलम्बित है। इसीलिये इसको 'मानव-धर्म' 'सनातन-धर्म' या 'आर्य-धर्म' भी कहते हैं। जर्मन लोग भी आर्य हैं। इसलिये प्राचीन आर्य-संस्कृति तथा संस्कृत भाषा की रक्षा और उन्नति करना आप लोगों का भी उतना ही कर्तव्य है, जितना कि हम लोगों का। जर्मन शब्द तो कदाचित् संस्कृत 'शर्मन' (ब्राह्मण) का बिगड़ा हुआ रूप ही है। अगर आपका निश्चय भारत आने का होगा तो, जहाँ तक हो सकेगा, ६ महीने के लिये छात्र-वृत्ति का प्रबन्ध आप के लिये कर दिया जायेगा।"

होइस्ट पेट जोइड नामक जर्मनी के निवासी योग की शिक्षा प्राप्त करने ऋषिकेश के शिवानन्द आश्रम में आये वहाँ पहुंचने पर कहा गया कि कमरे और भोजन के लिये ७५) मासिक देना पड़ेगा। उन्होंने एक पत्र लिखकर बिरला जी से प्रार्थना की कि इतना खर्च दे सकने की परिस्थिति मेरी नहीं है। ऐसा ज्ञात हुआ कि आप ऐसे व्यक्तियों की सहायता करते हैं, जो योग-साधना आदि के मार्ग में अग्रसर होना चाहते हैं। वर्तमान में मैं स्वर्गाश्रम में ठहरा हुआ हूँ।

उत्तर में बिरलाजी ने लिखा कि आप 'ठण्डे देश के रहने वाले हैं जहाँ का रहन-सहन का स्तर ऊँचा है। इसलिये उतना तो हम कर नहीं सकते, पर स्वर्गाश्रम में, जहाँ आप ठहरे हैं, आप चाहें तो एक-दो वर्ष रह सकते हैं। आपके भोजन तथा छोटी-मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति वहीं से हो जायगी। इस पत्र के साथ पचास रुपये जेब खर्च को भेजा जा रहा है।"

हिन्द-भक्त डा० स्मेकल--

चैकोस्लोवाकिया के एक सज्जन डा० स्मेकल अपने देश में हिन्दी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रचार कर रहे थे। उन्होंने बिरला जी को लिखा कि वे भारत-यात्रा पर आने वाले हैं और बिरला जी से भेंट करना चाहते हैं। बिरला जी ने उनके उत्तर में उनकी हिन्दी की प्रशंसा करते हुये लिखा कि—"आपने जैसी शुद्ध संस्कृत-निष्ठ सजीव हिन्दी में पत्र लिखा उसे पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। ऐसी हिन्दी तो यहाँ भी बहुत से पढ़े-लिखे भारतीय नहीं लिखते। मैं हिन्दू धर्म, संस्कृति और दर्शन के सम्बन्ध में कुछ पुस्तकें भेज रहा हूँ।"

इसके बाद बिरला जी ने डाक्टर स्मेकल के शोध-कार्य के लिये बहुमूल्य कोष और शोध-ग्रंथ भिजवाये। डा० स्मेकल ने आगामी पत्र में यह भी लिखा कि "चैकोस्लोवाकिया में रहते हुये भी मैं भारतीय ढंग से रहता हूँ। मेरी पुत्री का नाम 'इन्दिरा' तथा पुत्र का 'अरुण' रखा गया है और वे 'नमस्कार' कहना सीख गये है। मेरे घर की दीवारों पर भारतीय चित्र लटके रहते है और मेज पर एक देवी-मूर्ति रखी है।"

बिरला जी के देहावसान का समाचार पाकर डा० स्मेकल को अपार शोक हुआ और उन्होंने लिखा कि—

"विदेशों में अपनी दूसरी मातृभाषा हिन्दी का एक तुच्छ सेवक होने के नाते मैं भी बिरला जी के न रहने से अनाथ व निराश्रय-सा हो गया हूँ। मेरे भारतीय विद्या से संबन्धित प्रचार, अध्यापन, शोधकार्य की वृद्धि में उन्होंने जो उदार सहायता दी वह इस बात का प्रमाण है कि उनका हिन्दी के प्रति गम्भीर गहरा सम्बन्ध था। वे हिन्दी के विकास और विदेशों में भी उसके प्रचार पर ध्यान देते रहे। वे निस्सन्देह भारतीय संस्कृति के गौरव की रक्षा और अभिवृद्धि के क्षेत्र में एक ज्वलन्त उदाहरण थे। वे भारत-भारती के महा प्राण थे।"

अमरीकनों में प्रचार—

अमरीका निवासी जार्ज लेवी नामक सज्जन हिन्दू विश्व विद्यालय में अध्ययन करने आये। ये पहले जापान में रहने वाली अमरीका की सेना में काम करते थे। इसी बीच में वे बौद्ध धर्म की तरफ आकर्षित हुये और बौद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भिक्षु बन गये। उनके अध्ययन का व्यय अमरीकी सरकार ने देना स्वीकार किया था, पर आरम्भ में जब उनको आर्थिक कठिनाई पड़ी तो उन्होंने बिरला जी को लिखा। बिरला जी ने उनको आवश्यक सहायता भेजकर यह भी सम्मति दी कि "हिन्दू धर्म से प्रेम रखने वाले विदेशियों को भारतीय दर्शन-शास्त्र, गीता, वेदान्त आदि पर अंग्रेजी में लिखे ग्रंथों का अपने देश में रहते हुए भी अध्ययन करना चाहिये।"

हवाई टापू के विश्व विश्वविद्यालय के कुलपति श्री ग्रेग सिक्लेयर जब भारत आये तो उन्होंने बिरला जी से धर्म सम्बन्धी विषयों पर वार्तालाप किया। उनके सद्-व्यवहार और आध्यात्मिक जीवन से वे इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने कुछ समय बाद बिरला जी को एक पत्र में लिखा—"मैं अनुभव करता हूँ कि काश मैं अमेरिकन न होकर एक भारतीय ही होता। एक भारतीय के हृदय में ही मानवता की ऐसी विरासत संभव है। मुझे पक्का विश्वास है कि पाश्चात्य संसार भारत की संस्कृति और दर्शन से बहुत कुछ सीख सकता है।"

श्री सिक्लेयर को उत्तर देते हुये बिरला जी ने लिखा कि "भारतवर्ष इस युद्ध-जर्जरित संसार को अपना शान्ति और शुभकामना का सन्देश सुनाने में सफल हो, यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।"

स्वीडन के एक विद्वान् हैन्स फ्रैडलैंड योग की शिक्षा प्राप्त करने उत्तर काशी तक पहुंच गये और वहाँ अनेक भारतीय योगियों से मिलकर इस विषय की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने साधना-काल में सहायता की प्रार्थना की तो बिरला जी ने इस सम्बन्ध में यथासम्भव व्यवस्था करके उनको योगी व्यास देव जी से योगाभ्यास की शिक्षा प्राप्त करने की सम्मति दी थी।

इटली की एक धर्म-श्रद्धा रखने वाली महिला ने बिरला जी को बड़े दिन के अवसर पर शुभकामना का पत्र भेजा तो उसे बिरला जी ने अपनी 'धर्म-समभाव' की वृत्ति का परिचय देते हुये लिखा—"ईसा की अनुयायिनी होने की दृष्टि से आप ईसा को श्रद्धा की दृष्टि से देखती हैं, यह आपके लिये स्वाभाविक है परन्तु हम भी ईसा को एक सन्त, महात्मा तथा ईश्वरभक्त होने के नाते आदर की दृष्टि से देखते हैं। सन्त, महात्मा और महापुरुष किसी भी देश के हों हमारे लिये आदर के पात्र हैं। हमारा धर्म हमें सबसे साथ प्रेम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करना और बुराई को छोड़कर किसी के साथ घृणा न करने की शिक्षा देता है। खेद की बात है कि लोगों ने अज्ञानवश या स्वार्थवश धर्म के नाम पर अनेक संकुचित छोटे-बड़े समुदाय या सम्प्रदाय बना रखे हैं और उन सम्प्रदायों के अनुसार प्रचलित रीति-रिवाज तथा रूढ़ियों को 'धर्म' का नाम दे रखा है।"

जनरल डगलस मेक आर्थर को पत्र–

बिरला जी इस प्रकार निरन्तर विदेशियों के सम्मुख हिन्दू-धर्म और भारतीय संस्कृत के उज्ज्वल पक्ष को उपस्थित करने का ही प्रयत्न नहीं करते रहते थे, वरन् जब कभी हिन्दू और बौद्ध-धर्म का किसी के द्वारा अहित होता देखते थे तो उनके निवारण की चेष्टा भी करते थे। जब उनको मालुप हुआ कि जापान पर अमरीकी सेना का शासन होने के कारण उस देश में बौद्धमत का ह्रास होरहा है और जापानियों को ईसाई बनाने की जोर-शोर से कौशिश की जा रही है, तो उन्होंने वहाँ के अमरीकी शासक जनरल मेक आर्थर को एक पत्र भिजवाया जिसमें कहा गया था–

"हम भारतवर्ष की भिन्न-भिन्न हिन्दू तथा बौद्ध संस्थाओं की ओर से आपकी सेवा में निवेदन करना चाहते हैं कि प्राप्त सूचनाओं के अनुसार इस समय ईसाई मिशनरी लोगों के दल के दल जापान में आ रहे हैं और कुछ ही दिनों में ५० हजार जापानी अपने पूर्व पुरुषों के बौद्धधर्म से च्युत होकर ईसाई बना लिए गये हैं। यह भी सुना है कि वहाँ के शासन पर आमेरिका का प्रभाव होने के कारण शासन की ओर से ईसाइ मिशनरियों को ईसाइयत के प्रचार में अनेक अनुचित और पक्षपात पूर्ण सुविधाएँ प्रदान की जा रही है, यदि यह बात सत्य है तो यह अमेरिका के लिये बड़े कलंक की बात होगी। क्योंकि अमेरिका सदा से अपनी उदारता, धार्मिक निष्पक्षता तथा उच्च भावना के लिये प्रसिद्ध है।"

इसका उत्तर देते हुए जनरल मेक आर्थर ने लिखा–'यह सत्य है कि यहाँ ईसाई मत के नेता हैं और मिशनरी भी है जो जापानी लोगों की आत्मिक और शारीरिक आवश्यकताओं को पूर्ति करने में लगे हुये हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परन्तु साथ ही यहाँ बौद्ध भिक्षु यथा अन्य बहुत से मतों के लोग भी है, जो इसी प्रकार का कार्य कर रहे हैं। जापान में वर्तमान शासन सम्बन्धी नीति के अनुसार या उसके प्रभाव से किसी के साथ पक्षपात नहीं किया जाता अपितु सब अपने-अपने धर्म सिद्धांतों और उपदेशों का प्रचार करने में स्वतंत्र हैं।"

श्रीमती केनेडो को धर्म ग्रन्थों का उपहार–

बिरला जी हिन्दू धर्म और संस्कृति के प्रचार के लिये अनेक तरह से प्रयत्न किया करते थे। विदेशों के जो प्रसिद्ध व्यक्ति यहाँ आते थे, उनका ध्यान वे इस तरफ आकर्षित करने का प्रयत्न करते रहते थे। जब अमरीका के राष्ट्रपति स्वर्गीय केनेडी की पत्नी भारतवर्ष पधारी थीं मो बिरला जी के आदेश से 'आर्य [हिन्दू] धर्म सेवा संघ' की तरफ से अमरीकन राजदूत के द्वारा कुछ महत्वपूर्ण हिन्दू-धर्म ग्रन्थ उनको भेंट किये गये थे और साथ में एक पत्र भेजा गया था, जिसमें लिखा था–

"अ० भा० आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा-संघ की ओर से, जो एक धार्मिक सामाजिक, और सांस्कृतिक संस्था है, तथा जो हिन्दू-धर्म के सभी सम्प्रदायों बौद्ध, जैन सिख आदि का प्रतिनिधित्व करती है, हम श्रीमती जेकलिन केनेडी का हार्दिक स्वागत करते हैं। हमारी हार्दिक इच्छा है कि वे भारत में कुछ दिन ठहरें तथा अपने दर्शनीय स्थानों की सूची में दक्षिण भारत के प्रमुख मन्दिरों तथा नई दिल्ली के विख्यात श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर को भी सम्मिलित कर लें। इससे वे भारत के सच्चे रूप और इसकी संस्कृति से परिचित हो सकेंगी।

अर्जेण्टाइना (द० अमरीका) के हिन्दू-धर्म प्रेमी श्री जार्ज भारतवर्ष आकर कुछ समय तक बिरला-मन्दिर, दिल्ली में अतिथि के रूप में ठहरे थे। उनको जुगलकिशोर जी के आदेश से सब प्रकार की सुविधा और सहायता दी गई।, जिसके उपलक्ष्य में एक पत्र द्वारा उन्होंने अपने उद्‌गार इस प्रकार प्रकट किये—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"मेरी ओर से नये वर्ष की बधाई स्वीकार करें। मैं आपको सदा याद रखता हूँ और मेरे मन में आपके प्रति जो श्रद्धा और आदर है वह कदाचित् ही किसी अन्य व्यक्ति के लिये हो। मैं यदि कभी भी आपकी कोई सेवा कर सकूँ, तो यह मेरा अहोभाग्य होगा।"

स्वीडेन के एक जिज्ञासु श्री वियर्स ने भारत आकर योगविद्या सीखने की इच्छा प्रकट की थी। उनको उत्तर देते हुये बिरला जी ने स्पष्ट कहा कि "वर्तमान भारत वह भारत नहीं है, जो प्राचीन काल में अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये प्रसिद्ध था और जिसके आकर्षण से प्रेरित होकर आप यहाँ आना चाहते हैं। योग की शिक्षा देने वाले गुरु, जैसा आप चाहते हैं, बहुत ही एकान्त में कहीं-कहीं ही पाये जाते हैं और कठोर जीवन व्यतीत करते हैं।" इस उत्तर से विदित होता है कि साधु, महात्मा और धार्मिक नेताओं की हरतरह से सहायता और सम्मान करते हुये भी बिरला जी उनकी वास्तविकता को समझते थे और जानते थे कि आजकल यहाँ जो अध्यात्म की चर्चा सुनने में आती है उसमें सारतत्व बहुत कम है।

निस्पृह और गुमनाम कार्यकर्ता—

इसमें सन्देह नहीं कि बिरला जी के इन समस्त प्रयत्नों पर सामूहिक रूप से एक दृष्टि डालने पर श्री राम गोपाल शालवाले के इस कथन पर विश्वास हो जाता है कि उनमें "हिन्दू-धर्म की रक्षा के लिए जबर्दस्त तड़प थी।" भारत में उन्होंने जो मन्दिर आदि बनाये और विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं को दान आदि दिया उनसे उसे यश अवश्य प्राप्त हुआ, चाहे उनकी ऐसी भावना कभी न थी। पर विदेशों में उन्होंने वर्षों तक विभिन्न विद्वानों को भेजकर प्रचार-कार्य कराया और सैकड़ों विदेशियों से पत्र व्यवहार करके और उचित सहायता देकर उनको भारतीय संस्कृति का प्रेमी बनाया, उसका विवरण तो उनके जीवन काल में सर्वसाधारण को मालूम भी न हो सका था।

अब हम उनके स्मारक ग्रन्थ में पढ़ते हैं कि उन्होंने अब से चार वर्ष पूर्व पं० अयोध्या प्रसाद जी को एक मिशन के साथ ट्रिनीडाड, ब्रिटिश गायना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फिजी, डच गायना आदि उपनिवेशों में भेजकर प्रवासी भारतवासियों में धर्म प्रचार कराया था।

उसके पश्चात् स्वामी सत्यानन्द संन्यासी को बाली, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि पूर्वी द्वीपों में भेजा और वहाँ फैली हुई हिन्दू संस्कृति का विवरण तैयार कराया। पंडित ऋषिराम को मारीशस, मोम्बासा, केनिया (अफरीका) आदि भेजकर वहाँ के हिन्दुओं को अपने धर्म में निष्ठावान बनाया। कलकत्ता के भारत-धर्म सेवाश्रम संघ के संन्यासियों को दक्षिणी अमरीका के निकट के विभिन्न प्रदेशों और टापुओं में धर्म प्रचार के लिये भेजा।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के दर्शनाचार्य डा० आवेय को, जिन्होंने 'योग वाशिष्ठ' पर अपूर्व शोध-कार्य किया है और जो हिन्दू-धर्म के महान ज्ञाता हैं, अमरीका में हिन्दू-धर्म तथा दर्शन पर प्रचार करने भेजा। वहाँ से लौटते हुये उन्होंने हवाई द्वीप, स्याम, चीन आदि में हिन्दू धर्म पर अनेक व्याख्यान दिये।

इस प्रकार श्री जुगलकिशोर जी ने अपने काम और नाम का बिना ढिंढोरा पीटे देश-विदेशों में हिन्दू धर्म और भारतीय-संस्कृति के प्रचार का जितना अधिक काम किया था, उस पर जब हम ध्यान देते हैं, तो उनकी निस्पृहता और यश तथा ख्याति से दूर रहकर धर्म तथा जाति की सेवा करने की मनोवृत्ति पर स्वयमेव श्रद्धा होने लगती है। उनके परिजितों का कहना है कि यद्यपि इस प्रकार के प्रचार और सहायता कार्यों में उन्होंने अगणित रुपया खर्च किया, पर जहाँ तक बना उन्होंने ये समस्त कार्य चुपचाप ऐसे ढंग से किये जिससे उनके निकटवर्तियों को भी उसका पता न लग सके। उनकी इसी भावना और प्रवृत्ति को देखकर श्री वृजकृष्ण चाँदीवाला ने लिखा है——

श्री जुगलकिशोर जी के सम्पर्क में मैं पूज्य गाँधी जी द्वारा आया। उन्होंने हिन्दू-धर्म की जितनी सेवाएँ की हैं, उतनी शायद ही किसी ने की हो। उनके कार्य को देखकर मुझे 'गीता' का यह कथन याद आता है——

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वं शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमन्तां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥

इस श्लोक के अनुसार बिरला जी शायद पूर्व जन्म के कोई योगभ्रष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुरुष थे, जिन्हें अपनी साधना पूरी करने को यह जन्म लेना पड़ा।"

बिरला जी के पिता राजा बलदेव दास जी भी कभी-कभी उनकी चर्चा चलने पर कहा करते थे-"सन्त है, महात्मा है, साधु है। दिल्ली,वृन्दावन, पटना आदि सब जगह अपने खर्च से मंदिर बनवाये हैं और उनमें नाम मेरा देता है। मैंने कई बार इससे अपना नाम देने को कहा, पर वह नहीं माना।"

जब हम वतमान नेताओं की यशलिप्सा को देखते हैं, जो थोड़ा-सा प्रदर्शन करके ही सबसे अधिक ध्यान अपना वर्णन और फोटो अखबारों में छापने पर दिया करते हैं, तो बिरला जी की इस प्रकार गुमनाम रहकर कार्य करने की मनोवृत्ति पर आश्चर्य होता है।

अछूतोद्धार के समर्थक—

यद्यपि बिरला जी का जन्म मारवाड़ी समाज में हुआ था, जो कि छुआछूत के मामले में बड़ा रूढिवादी माना जाता है, पर हिन्दुओं की एकता को दृष्टिगोचर रखकर उन्होंने इस भावना को कभी प्रश्रय नहीं दिया। यहाँ तक कि एक बार होली के अवसर पर जब वे बनारस की कोठी पर थे, सब नौकर उनसे होली मिलने आये और गुलाल-अबीर लगाया। उस समय एका-एक उन्होंने कहा—" अरे, झमकू (मेहतर) क्यों नहीं आया। उसे भी बुलाओ।" इस प्रकार झमकू ने भी वहां आकर बिरला जी को गुलाल लगाया।

जिस दिन डा० अम्बेडकर ने लोकसभा में भाषण देते हुए कहा कि हिन्दुओं में शूद्रों की भी संख्या ६० प्रतिशत है, उस दिन बिरला जी ने इसका विरोध करते हुए जोर के साथ कहा—

"डाक्टर अम्बेडकर का कथन न केवल असत्य है, बरन् शरारत से भरा हुआ तथा हिन्दुओं में परस्पर विरोध फैलाने वाला है। अम्बेडकर जी ने यह आँकड़ा कहां से पाया, यह तो वही बता सकते हैं, लेकिन वास्तविकता बिल्कुल इसके विपरीत है। शूद्र कहे जाने वालों की संख्या हिन्दू

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज में बहुत थोड़ी है । शूद्रों की बात जाने दें, जो अछूत कहे जाते हैं, उनकी संख्या भी उतनी नहीं है, जितनी सरकारी आँकड़ों में दिखाई गई है । यह अँगरेजी राज्य के समय से हिन्दुओं को छिन्न-भिन्न करके उसके राजनीतिक महत्व को घटाने की सरकार की कुटिल नीति का परिणाम था कि अछूतों की संख्या जनगणना में पाँच करोड़ दिखाई गई । अब ऐसा लगता है कि डा० अम्बेडकर भी शूद्रों की संख्या ६० प्रतिशत बताकर पारस्परिक विद्वेष की भावना उभारकर हिन्दुओं से अपना चिरसंचित बदला लेना चाहते हैं ।"

इस सम्बन्ध में बिरला जी के विचार बड़े प्रेरणादायक थे और उन्होंने जब कभी अवसर आया इस भेदभाव की भावना का बड़े जोर के साथ खन्डन किया । उन्होंने एक लेख में कहा है—अपने को धर्म-शास्त्रों का जानकर मानने वालों को यह भी पता नहीं कि अछूतों में किसकी गणना करनी चाहिये ? क्या कारण है कि नासिक और पूना में उन शिक्षित और वीर जातियों को, जो शिवजी के सिपाही थे, लोग अछूत मानते हैं, और उन्हीं की जाति वालों को दूसरे प्रान्त में अछूत नहीं मानते ? एक जाति एक प्रान्त में अछूत और दूसरे में नहीं ! सौ वर्ष पहले जिसको अछूत मानते थे उनको अब वैसा नहीं मानते ! अब अन्य जातियों को अछूत मानने लग गये हैं । यह कोई नहीं सोचता कि अछूत कितने हैं और कहां हैं तथा क्यों और कैसे बन गये ? लोग यह भी नहीं सोचते कि इन चोटीधारी तथा राम के भक्तों को स्वधर्म में रहते हुए नीच और चोटी कटा देने पर ऊँचा क्यों समझते हैं ?"

मन्दिर में हरिजन प्रवेश की समस्या पर बिरला जी का मत प्रगतिशील था । उन्होंने अपने समस्त मन्दिरों में जिनकी संख्या बहुत अधिक है, सिवाय छूत के रोगियों और पागलों के और किसी के प्रवेश पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया है । उनका कहना था—

"यदि मूर्ति में देवता और भगवान की भावना रखते हो तो वह अपवित्र हो ही नहीं सकती, और यदि भगवान की भावना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं रखते, तब उसका क्या अपवित्र होगा ?

बिरला जी जैसे 'धर्म-भक्त' का अछूतों के प्रति यह न्याययुक्त व्यवहार और भावना सभी उच्च वर्ण के हिन्दुओं के लिये अनुकरणीय है। ऐसा कोई हिन्दू नहीं जान पड़ता जो उनको 'आधुनिकतावादी' अथवा 'अधार्मिक' कह सके। उनके अनेक सहयोगियों का तो कथन है कि उनकी भक्ति इतनी दृढ़ थी कि उनको अनेक बार भगवान की दैवी कृपा का प्रत्यक्ष परिचय मिला करता था।

व्यावहारिक अध्यात्म के उपासक—

बिरला-परिवार भारतवर्ष का प्रमुख व्यवसायी और पूँजीपति माना जाता है। अधिकांश लोगों का तो यह विश्वास है कि हमारे देश में उस से बड़ा 'धनी' और कोई नहीं है। इस कारण जनता का एक वर्ग उसकी विपरीत आलोचना किया करता है और उसकी गिनती 'शोषक-समुदाय' में ही करता है। भारतीय संसद में भी प्रायः उस पर अनेक प्रकार के दोषारोपण और आक्षेप किये जाते हैं। यह सब होने पर भी जुगलकिशोर जी के सम्बन्ध में लोगों की किसी प्रकार दूषित भावना न थी। उन्होंने बहुत वर्षों से व्यापार में सक्रिय भाग लेना छोड़ दिया था और अपनी समस्त शक्ति, समय और साधन समाज हित के कार्यों में ही लगाते रहते थे।

उनके कार्यों पर विचार करके हम को यह अनुभव होता है, कि श्री जुगलकिशोर जी के चरित्र का प्रधान अंग रुपया कमाना या धनी होना नहीं था, वरन् अपने कमाये धन को उन्होंने बहुत सोच समझ कर देश और जाति के उत्थान के कार्यों में खर्च किया, इसी से वे श्रेष्ठ और अनुकरणीय पुरुषों की श्रेणी में आते हैं। इस पहलू पर विचार करके प्रसिद्ध साहित्यिक सेठ गोविन्द दास जी ने लिखा है

"श्री जुगलकिशोर जी की खूबी धन कमाने में नहीं थी। धन तो उनके पहले भी बहुतों ने कमाया था, आज भी कमा रहे हैं। परन्तु उनकी खूबी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थी धन कमाना और उसका उचित विनियोग करना। गाँधीजी ने कहा है—"धनिक वर्ग अपने को अर्जित सम्पति का ट्रस्टी समझें" बापू के इस सिद्धान्त के अनुसार ट्रस्टी रूप में अपनी ही अर्जित सम्पत्ति के सम्बन्ध में व्यक्ति को सतत् जागरूकता के साथ यह देखना होता है कि वह सम्पत्ति का कितना हिस्सा किस कार्य में खर्च करे, उसे कैसे सुरक्षित रखे। वह यह भी ध्यान रखे कि उसका प्रवाह तो बन्द नहीं हो रहा है? जुगलकिशोर जी ने इन तीनों दृष्टियों से अपने को ट्रस्टी मानकर अपनी सम्पत्ति का सर्व साधारण के लिये संतुलित उपयोग किया था।"

आजकल अधिकांश धनवान यह समझते हैं और अवसर आने पर कह भी देते हैं कि हमारा धन है हम जैसे समझेंगे खर्च करेंगे। और वास्तव में बहुसंख्यक पूँजीपति अधिक व्यय अपने आराम तथा विलास के कार्यों में करते देखे भी जाते हैं। अगर जुगलकिशोर जी उस श्रेणी के 'धनी' होते तो आज कदाचित् ही कोई उनकी जिक्र करता। पर जितने लोग उनसे मिलते-जुलते थे उन सबकी सम्मति यही है कि सेवा कार्य में इतना खर्च करने पर भी जुगलकिशोर जी स्वयं बहुत ही सादा और त्यागियों जैसा जीवन बिताते थे। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हिन्दी जगत के प्रसिद्ध लेखक और खरी आलोचना करने वाले श्री किशोरी दास बाजपेयी ने बिरला जी के सम्बन्ध में ठीक ही लिखा है–

"धर्मवीर जुगलकिशोर बिरला पूर्णतः सम्प्रदाय निरपेक्ष थे। धर्म-निरपेक्ष कहना तो एक गाली है। धर्म-निरपेक्ष का अर्थ है—'अधर्मी'। वे धर्म-परायण थे। अहिंसा: सत्य, दान दया ईमानदारी आदि धर्म' के अंग हैं। ये सम्पूर्ण तत्व उनमें थे।

"परिश्रम करके रुपया कमाना और फिर उसे अपने सुख-आनन्द में व्यय न करके पूरी जाति के अभ्युत्थान में लगाना कितनी बड़ी तपस्या है।" यही तो 'कर्मयोग' है।

—☼—

युग निर्माण प्रेस, मथुरा में मुद्रित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवम् आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है, उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org